हिंदी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन : का ओशांश

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक

B.A. II Hindi Hons.

भाषा में लिखी गयीं। यह काव्यधारा भारतीय काव्य परम्परा से सर्वथा भिन्न ही नहीं बल्कि सर्वथा उल्टी थी। भारतीय चिंतन परम्परा में ब्रह्म या ईश्वर को परम पुरुष माना गया है तथा जीवात्मा नारी रूप होकर परम पुरुष परमात्मा का संधान करती है। किन्तु सूफी परम्परा में ब्रह्म को नारी के रूप में चित्रित किया गया है जबकि जीवात्मा पुरुष रूप में। यही जीवात्मा रूपी पुरुष उस ब्रह्म रूपी नारी के संधान में अनन्त कष्ट एवं बाधाओं का सामना करता हुआ अन्तत: अपनी निष्ठुर प्रियतमा को प्राप्त करता है। इसी प्रकार इनकी वर्णन शैली भी अभारतीय है। जैसे भारतीय परम्परा में नख-शिख वर्णन की प्रधानता रही है, ~~जबकि~~ जबकि मसनवी शैली में शिख-नख वर्णन की परम्परा है।

इन सूफी संतों ने अपने काव्य का उपजीव्य भारतीय लोक कथाओं से ही प्राप्त किया है। और इनका वर्णन इतना मर्मस्पर्शी एवं कौतुकपूर्ण है कि पाठक उसमें रम सा जाता है और इन कथाओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। इनके काव्यों में जितने भी पात्र आए हैं सभी लौकिक पात्र हैं। हां यह भी सत्य है कि वे सारे के सारे पात्र ऐतिहासिक हैं, घटित घटनाएं भी ऐतिहासिक हैं किंतु उनका मूल उद्देश्य कुछ और है। ये सूफी साधक इन कथाओं के माध्यम से या अपने काव्यों के आख्यान के माध्यम से हिंदुओं को प्रभावित कर अपने पंथ का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे। इनका मूल उद्देश्य इस्लामी शासन को हिन्दुओं द्वारा ग्राह्य एवं स्वीकार्य बनाना भी था। इनका दूसरा उद्देश्य था- इश्क मजाजी से इश्क हकीकी की प्राप्ति।

इनकी स्पष्ट मान्यता थी कि ईश्वर की प्राप्ति का एकमात्र मार्ग है प्रेम। प्रेम का ही प्रसार संपूर्ण सृष्टि में फैला हुआ है जिससे प्रेमी जीवात्मा प्रभावित होकर परमात्मा के संधान में निकल पड़ता है और विघ्न-बाधाओं को झेलता हुआ उस परम प्रेमी को प्राप्त कर जीवन को धन्य बनाता है।

सूफी कवियों ने अपनी काव्यरचना पूर्णतः भारतीय परिवेश में की है। उन्होंने अरबी-फारसी भाषा के स्थान पर अवधी भाषा का प्रयोग किया है। इनके द्वारा प्रयुक्त छन्द भी भारतीय हैं। भले ही इनके साहित्य का उद्देश्य चाहे जो भी रहा हो किन्तु इनकी रचनाओं से हिंदी साहित्य का कोष तो निश्चय ही समृद्ध हुआ है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संवत 1375 से 1700 संवत तक का एक लम्बा कालखंड भक्ति भी कहें आध्यात्मिक रचनाओं से भरा पड़ा है। इसलिए चाहे सामाजिक प्रवृत्ति की बात करें या साहित्यिक प्रवृत्ति की सबमें एक ही बात रची-बसी है और वह है भक्ति। अतः इस काल को विशेष रूप से भक्तिकाल कहना पूर्णतः समीचीन प्रतीत होता है।

notes
Phone
email
website